International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 189- 194
Received: 18-11-2022
Accepted: 13-12-2022

शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

वेदों में यज्ञ द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक पर्यावरण के संदर्भ

शिवओम हरि

प्रस्तावना

'सर्वज्ञानमयो हि सः', 'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति', 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' इत्यादि सुक्तिवचनों से वेद को सर्वविद्या से परिपूर्ण एवं विश्व-कल्याणकारी भावना वाला सिद्ध किया गया है । शब्दों के सार के रहस्यवाद में कुशल भारतीय विद्वान, दार्शनिक, नैतिकतावादी, व्याकरणविद और वैज्ञानिक भी वेदों की सर्वोच्च प्रामाणिकता की घोषणा करते हैं । आधुनिक युग निर्माता महर्षि देव दयानंद ने भी यह घोषणा की कि 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं , वेदों का पढना और पढ़ाना, एवं उन्हें सुनना और सुनाना सभी श्रेष्ठों का परम धर्म है' । अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी समस्याओं का समाधान भी वेदों में ही मिलता है ।

वेद वास्तव में चाहे धर्म के ग्रंथ हों या आध्यात्मिक ग्रंथ या विभिन्न विज्ञानों के कोष ग्रंथ, यह निर्विवाद है कि वेदों में विषय को प्रस्तुत करने की शैली काव्यात्मक है । वेदों में स्तुति, प्रार्थना, पूजा, दार्शनिक चर्चा, मानव कर्तव्य की समझ, आत्मज्ञान, अच्छे कर्मों की प्रशंसा, बुरे कर्मों की निंदा, पाप का प्रायश्चित्त, युद्ध द्वारा भयानक विनाश, विजय में तुरही की ध्वनि के साथ राज्य की पूजा आदि का वर्णन देखा जा सकता है । भोर के ऊषा काल से सूर्य की पूजा, रात्रि में चन्द्रमा की शीतलता एवं अंधेरे के संहार की अभिव्यक्ति, फसलों में बारिश रूपी अमृत अभिव्यक्ति, बिजली की तरंगे या बिजली की गर्जना, हवा की आवाज, पक्षियों के झुंड, पक्षियों के समूह एवं उनका कोलाहल स्रोत चाहे वह संदेश हो यज्ञ की लपटों का या चंद्रमा के रस के निर्वहन का - हर जगह एक काव्य शैली दिखाई देती है । इस छोटे से लेख में हम वेद में प्रकृति के कुछ चित्रण प्रस्तुत करेंगे और यह समझाने का प्रयास करेंगे कि प्रकृति के इन चित्रणों से वेद में क्या संदेश प्राप्त होते हैं । यदि किसी कविता में प्रकृति का चित्रण केवल चित्रणमात्र होता तो पाठकों को इससे कोई सन्देश प्राप्त नहीं होता है, और उनमें कोई जागरूकता नहीं आती है, एवं उनके हृदय के तार नहीं बजते हैं तो उनमें ईश्वरीय चेतना की अनुभूति नहीं होती है, तो उस कविता का कोई मूल्य नहीं होता है ।

वर्तमान समय में भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक राक्षस की तरह संपूर्ण विश्व को निगलने को तैयार है । इस समस्या का समाधान वेदों में प्रचुरमात्रा में पाया जाता है । यह पूछे जाने पर कि पर्यावरण क्या है, पर्यावरण वह वातावरण है जो वायुमंडल को चारों ओर से घेरता है और ढकता है । पर्यावरण पृथ्वी को चारो ओर से घेरता है और मानव जीवन को प्रभावित करता है । इनमें वायुमंडल, स्थलमंडल, जलमंडल और रासायनिक तत्वों का संग्रह शामिल है । इसप्रकार, पर्यावरण भौतिक और जैविक तत्वों के संयोजन से बना है । भौतिक तत्वों में मिट्टी, जल, वायु और प्रकाश शामिल हैं । जैविक तत्वों में संपूर्ण जीवित जगत, पेड़-पौधे शामिल हैं । इन सभी तत्वों का उचित संरक्षण पर्यावरण की रक्षा करता है ।

इस विषय पर चारों वेदों में अनेक मन्त्र हैं । किसी भी शुभ समारोह के आरंभ और अंत में की जाने वाली विभिन्न प्रार्थनाओं में पर्यावरण संरक्षण के संदेश बहुतायत से सुने जाते हैं । सुप्रसिद्ध शांति पाठ मंत्र में, ***द्युलोक*** और पृथ्वीलोक के सभी चेतन और अचेतन का संतुलन, संरक्षण और कल्याण की कामना की गई है ।
-

ओ३म् " द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरायः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि[१] ।

" वैदिक ऋषि जानते थे कि सूर्य ऊर्जा का अखंड स्रोत है । सूर्य और उसकी गर्मी पृथ्वी पर जानवरों और पौधों में जीवन को बनाए रखते हैं । बादल सूर्य की किरणों के ताप से बनते हैं । जो पृथ्वी पर वर्षा कराते हैं औरअन्न उत्पादन में सहायक होते हैं तथा औषधियों के रंगों से ही पौधों का पोषण करते हैं । इससे मानव शरीर का पोषण होता है और औषधियों से पोषण मिलता है । भगवान भास्कर को प्रसन्न करने के लिए वेद की ऋचाओं में आम लोगों, जानवरों और पौधों की दुनिया पर सूर्य के प्रभाव को ऊर्जा के असीमित स्रोत रूप में प्राप्त होने की प्राथनाएं है ।
सूर्य को जगत की आत्मा के प्रतिरूप में निम्न मन्त्र में ऋषि द्वारा स्तुति की गई है –

"दिव्य सुवर्ण वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् । अभीपती वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वतन्तमवसे जोहवीमि२ । ।

द्युलोक में विराजमान, गतिशील, महामहिमाशाली जल के केंद्रविन्दु औषधि आदि के पोषक जलवृष्टि के द्वारा भूमि को तृप्त करने वाले सूर्य देव का हम आवाहन करते है

"तस्या: समुद्रा अधिविक्षरन्ति तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्त्रः । ततः क्षरत्यक्षरं तद् विश्वमुपजीवति" । ।[३]

सूर्य की किरणों का तेज वायुमण्डल में दृश्य एवं अदृश्य कीटाणु व विषाणुओं को नष्ट कर डालता है । कहा भी गया है –

"उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अद्रृष्टहा"[४] । ।

वेद में जैसे सूर्य के द्वारा अग्नि की स्तुति की गई है उसी प्रकार अग्नि भी पर्यावरण की रक्षा के जहाँ वहां श्रद्धा पूर्वक रत्नों को धारण करती है। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ऋषियों के द्वारा अग्नि की स्तुति करते हुए प्रार्थना की गई है –

"ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्"[५] ।

वेद में अग्नि की महिमा का प्रति पादन करने वाले मंत्र मनुष्य के पथ का सरल प्रदर्शन करते हैं। अग्नि के सम्बन्ध में प्राचीन मत के अनुसार सबसे उत्कृष्ट कर्म यज्ञ द्वारा पर्यावरण का संरक्षण करना है । वेदों पर्यावरण संरक्षण के लिए यज्ञ की महिमा सर्वोच्च मत है। जैसे पेड़ पौधों का महत्व पर्यावरण की दृष्टि से मुख्य होता है उसी प्रकार यज्ञ भी वैदिक संस्कृत तरंग तत्वों में मुख्य होता है । यज्ञ आदि के द्वारा मंत्रों से इंद्र वरुण आदि का आवाहन किया जाता है और वे पर्यावरण का पोषण करते हैं ऐसा भारतीय विद्वानों का मत है एवं वैज्ञानिकों का चिंतन है । यास्क द्वारा ये समझाया गया है कि यज्ञ करने वाला याजक यजमान के लिए अन्न आदि की याचना करता है अथवा यजमान उस यज्ञ जो कर्म विशेष है उसके द्वारा देवताओं से वर्षा आदि की प्रार्थना करता है, ओर निश्चय ही उसके लिए यज्ञ द्वारा ये सब संभव हो जाता है । संसार में इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है कि यज्ञ क्रिया द्वारा वर्षा होती है । वर्षा द्वारा अन्न उत्पन्न होता है ओर अन्न से ही संसार में विद्यमान सभी प्राणियों का पोषण होता है । यज्ञ से ही सभी तरह के संक्रमण रोगों का समूल नष्ट होता है इस तथ्य को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है । यज्ञ में जो कुछ भी हम ऋतु अनुकूल घी सामग्री आदि वस्तुओं को आहुति डालने में प्रयोग करते हैं, वह यज्ञ का धुआं बनकर वायुमंडल में फैलता है और वायुमंडल में फैले प्रदूषण के कारक तत्वों को नष्ट करता हैं, उससे वातावरण स्वच्छ होता है । वेद में यज्ञ का यह पक्ष विशेष रूप से निरुपित है । यजुर्वेद में कहा भी गया है –

"मनसपत इमं देव यज्ञं स्वाहा वाते वा"[६] । ।

यज्ञ का धुआं वायुमंडल में फैलकर उसके पर्यावरण को शुद्ध करता है इस सत्य को सभी स्वीकार करते हैं । ऋतु के बदलने पर संसार में व्याधियों की अधिकता दिखाई देती है । ऋतु परिवर्तन होने पर ऋतु के अनुसार शास्त्रों में यज्ञों के अनुष्ठान का विशेष रूप से वर्णन है । इससे व्याधियों के संकट को काबू किया जा सकता है । यज्ञों के अनुष्ठान से वायुमंडल प्रदूषण रहित

होता है यजुर्वेद में इन शब्दों से प्रकाश डाला है –

"समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् | अस्मिन् हव्या जुहोतन |"७

अग्नि के सामान वायु को जीवन प्रदान करने वाला एक तत्व माना गया है | आज शहरों या महानगरों में दिन-रात वाहनों से छोड़ी जाने वाली प्रदूषित वायु के कारण लोग तरह-तरह की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं । इसलिए वायु शोधन जरूरी है । वेद उद्घोष करते हैं –

वात आ वातु भेषजं शम्भुमयोभु नो हृदे । प्रण आयूंषि तारिषत् ।।[८]
यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः । ततो नो देहि जीवसे ।।[९]
आ वात वाहि भेषजं विवात वाहि यद्रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ।।[१०]

ये मंत्र वातावरण में वायु के महत्व को सिद्ध करते हैं । वेदों में जलीय पर्यावरण की सुरक्षा के लिए यहां वहां विस्तृत उपदेशीय चर्चा प्राप्त होती है । जल ही जीवन है। दूषित पानी मानव स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचाता है । ऋग्वेद में सोमलता का अतुलनीय महत्व बताया गया है । जब कोमल सोम लताओं से जब रस निकाला जाता है तो वहां विशिष्ट मंत्रोच्चारण का विधान था । वहां सोमलता के रस को स्फूर्तिदायक और अमृत माना गया है | कहा भी गया है –

"इन्द्रस्ते सोमसुतस्य पेयाः कृत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः" | |[११]

''गीता में भगवान कृष्ण ने "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्" [१२] अर्थात् पीपल सभी वृक्षों में सर्वश्रेष्ठ है कहकर पीपल नामक वृक्ष के प्रति भगवान के सादृश्य को प्रकट करके वृक्षों के महत्व को प्रतिपादित किया है । इसी प्रकार भारतीय परंपरा में, बरगद के पेड़ का उल्लेख प्राप्त होता है, जहाँ उसको शांत वृक्ष के रूप में वर्णित किया गया है । पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से वट ,पीपल ,बेल, नीबू, अंजीर तथा शामिली के वृक्षों को काटना वर्जित है| यजुर्वेद में कहा गया है – "वनस्पतिः शमिता" |
अथर्ववेद में पेड़-पौधों, पशुओं और पक्षियों से संबंधित अनेक मन्त्र देखने को मिलते हैं । ये मन्त्र विभिन्न रोगों के उपचार में बहुत ही उपयोगी हैं । ऋग्वेद में आरोग्य कारक औषधीय पौधों का वर्णन बहुत जगह प्राप्त होता हैं –

"शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः । अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत । ।"
"ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः" ॥[१३]

शुक्ल यजुर्वेद में पौधों को आदरपूर्वक प्रणाम किया गया है –

"नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः , वनानां पतये नमः, वृक्षाणां पतये नमः, नमो वन्याय च" ।[१४]
अरण्य वर्णन –

पर्यावरण के संदर्भ में पहले वन का वर्णन करने वाले ऋग्वेद के एक सूक्त का अध्ययन करेंगे । इसमें एक वनवासी और एक नागरिक के बीच बातचीत का वर्णन है । इस सूक्त को अरण्यनी सूक्त कहा जाता है । अरण्यनी शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए व्याख्याकार यास्क कहते हैं – 'अरण्यानी अरण्यस्य पत्नी'[१५] अरण्यणी वन की पत्नी है । अरण्य को वन कहते हैं और वह उसकी पत्नी नहीं हो सकती क्योंकि वह निर्जीव है । जब मुख्य अर्थ में लक्षणा बाधित होने पर विशेषता लागू होती है, और वन का लक्ष्य अर्थ ' वन में एक आदमी' के रूप में प्राप्त होता है 'वन ' शब्द के साथ ' वन में आदमी' का अनुभूति इतनी दिलचस्प है कि यहाँ वन और उसके जीवन की जीवनदायिनी प्रकृति के साथ उस आदमी की एकता को व्यक्त करता है । जो पुरुष वन में रहता है उसकी अरण्यनी नाम की पत्नी होती है । एक नागरिक वन में आता है और वनवासी की पत्नी से पूछता है, "हे जंगल की देवी, आप जंगलों में क्यों रहती हैं? क्या तुम गांव में नहीं रहती ? क्या तुम्हें यहाँ जंगल में भय नहीं सताता ? वनवासिनी उत्तर देती है –

वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः । आधाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते ॥[१६]

अच्छा आप डर की बात कर रहे हैं । डर कहाँ है ? यहाँ यद्यपि बिना वीणा के भी संगीत का आनन्द प्राप्त होता है, बैल नामक तेज आवाज वाले प्राणी को देखें, जो अपने तीव्र स्वर के साथ दिशाओं में दहाड़ता है, और जब चिक चिक करता हुआ चिचिको नामक एक अन्य प्राणी उसके पास आता है, तो एक वन रूपी गायक के वीणा तन्त्र स-से-ग-म-प-ध-नि- ऐसे संगीत के सात स्वरों के शोध जैसी अनुभूति होती है । यहाँ कवि की कितनी चतुर कल्पना है और रूपक और अलंकार का क्या चमत्कार है । यहाँ केवल ध्वनि द्वारा स्वार्थ को

बढ़ावा देने वाले 'वृषरात्र-चिचिक' शब्दों के प्रयोग में पदों की उपयुक्तता में कैसी प्रवीणता है इस बात का कितना आश्चर्य है ? इस सूक्त में छह मंत्र हैं । लेकिन उन्हें एक ही मंत्र दिया जाता है –

आञ्जनगन्धीं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम् । प्राह मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम् ॥ [१७]

नगरवासी लोगों को बताते हैं कि जंगल में रहने वाली देवी जंगल की सड़कों पर अपनी महिमा गाती हुई नागरिक जनों से कह रही है । नारंगी के युवा वृक्षों द्वारा उगाए गए फूलों से सुगंधित इस वनवीथी को देखें जो बिना खेती के अन्न की प्रचुरता से भरपूर, और विभिन्न जानवरों की माता के सामान है । उसकी कौन स्तुति नहीं करेगा ? ' बह्वन्नाम् आकृषीवलाम् ' विना कारण के कार्य की उत्पत्ति के वर्णन से यहाँ कल्पना और विभावना अलंकार का सौन्दर्य प्रकट होता है । स्त्रीलिंग में एक जननी के रूप में वन का वर्णन भी बहुत ही मनोहर है । नागरिक का प्रश्न था कि क्या तुम्हें भय नहीं लगता | एक माँ के रूप में वनवीथी का चित्रण स्वतः ही उस प्रश्न का समाधान कर देता है | एक माता से कैसा भय ? वन श्रृंखला का यह मनमोहक चित्रण यह सन्देश देता है कि तृतीय वर्ष की उम्र में ही घर का भार पुत्र व पुत्रवधू पर छोड़ कर स्वयं आश्रम में प्रवेश कर वन के एकान्त एवं सुन्दर वातावरण को अपना निवास स्थान बना लेना चाहिए ।

विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त में पर्यावरण –

विश्वामित्र को करोड़ों संतों में से एक माना जाता है , जिनके मन में सभी के प्रति मित्रता की भावना है । 'विश्वामित्र सभी के मित्र हैं', "विश्वामित्रः सर्वमित्रः" [१८] ऐसा निरुक्त में परिभाषित गया है | पाणिनि सूत्र 'मित्रे चर्षो' में विश्व शब्द के दीर्घ-अन्त का आदेश है ऐसा पाणिनि का प्रमाण है । वह विश्वामित्र राजा सुदास का पुरोहित है । वह जो वास्तव में अच्छा दान देता है वह सुदास है | 'सुदाः कल्याणदानः'[१९] ऐसा निरुक्त में परिभाषित गया है | विश्वामित्र शुभ दान देने वाले राजा सुदास से धन, भोजन, वस्त्र और अन्य दक्षिणा स्वरूप उपहार प्राप्त करने के बाद वन के रास्ते अपने निवास को लौट रहे थे । वह देखते हैं कि जो वन के पेड़ नगर में जाते समय पानी कम होने के कारण अच्छी तरह दिख रहे थे, वे अब जलमग्न हो गए हैं । वे भयानक हैं, और उनके ऊपर जल प्रवाहित हो रहा है । विपाशा और शुतुद्री नदी को देखकर विश्वामित्र के मन में काव्य की धारा फूट पड़ती है | विपासा एक विस्तृत बहने वाली नदी है, और शुतुद्री वह है जो तेजी से बहने वाली है, जिसके हाथ में तलवार है, वह इसे तेजी से चलाती है । जैसा कि निरुक्त में कहा गया है –

"विपाड् विपाटनाद्वा विपाशनाद्वा विप्रापणाद् वा । शुतुद्री शु द्राविणी, आशु तुत्रेव द्रवतीति वा[२०] |

विश्वामित्र ने कहा –

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने । गावेव शुभे मातरा रिहाणे विपाद्छुतुद्री पयसा जवेते[२१] ||

विपाशा और शुतुद्री ये दो नदियाँ अपने-अपने वेग से चलती हैं, और अपने साथ आने वाली वस्तुओं को भी लेकर बड़े वेग से चलती हैं | रास्ते में आने वाले पर्वतों को काटकर एक दुसरे से आगे निकलने के लिए संघर्ष कर रही हो | ऐसा लगता है मानों दो धावक एक साथ दौड़ प्रतियोगिता करते हुए एक दूसरे से आगे निकल रहे हों । इसके अलावा ये दोनों नदियाँ नदी के किनारों को वैसे ही चाटती हैं जैसे दो गायें अपनी जीभ से अपने बछड़ों को चाटती हैं ।

दूसरी ओर नाव पर झुक कर, विश्वामित्र वर्णन करते हैं कि ये नदियाँ कैसे तेजी से चलती हैं जैसे कि एक रथ दुसरे रथ पर सवार होकर अपनी लहरों के साथ एक दूसरे को गले लगाते हुए और अपनी बाहों की रस्सियों से बंधे हुए, वे एक दूसरे को आनंद में भिगोते हुए प्रतीत होते हैं | नदी का सचेतन वर्णन यहाँ कितना सौंदर्य लाता है ।

वहां सिंधु भी है । "सिन्धुः स्यन्दनात्"[२२] यहाँ सिंधु को निश्चय ही विशिष्ट प्रवाह वाली नदी बताया गया है | इन नदियों के विकट संगम को देखकर, पाँचवे मन्त्र में विश्वामित्र उन्हें एक पल के लिए अपने स्वयं के प्रवाह को रोकने के लिए कहते हैं ताकि वह पार कर सकें । नदियां जवाब देती हैं: वज्र बाहु इंद्र भगवान, पहाड़ों के बर्फ-पत्थरों को कुचलते हैं, बादलों को कुचलते हैं, या उन्हें अलग करते हैं, और सूर्य-देवता जिनके हाथ अच्छे हैं, वे हमें आगे बढ़ाते हैं । हालाँकि, हम दोनों उनकेके अनुशासन में चलते हैं । हम आपके वचनों (मंत्रपाठ) से कैसे अवरुद्ध हो सकते हैं? अंत में, विश्वामित्र नदीयों को 'स्वसार शब्द से संबोधित करते हैं | हे बहनों, मेरी प्रार्थना सुनो, मैं दूर से अन्न और धन से भरा रथ और एक साधन लेकर आ रहा हूं । नदियाँ 'स्वसारः' संबोधन सुनकर चकित हो जाती हैं और तुरंत अपने भाई विश्वामित्र के लिए कम पानी वाली बन जाती हैं । विश्वामित्र बिना किसी कठिनाई के उन्हें पार कर जाते हैं । चेतन पुरुष का अचेतन नदियों से संवाद सिद्ध करता

है कि यह वर्णन कितना काव्यात्मक है । और वेदों का वर्णन करने में कवि बहुत सफल रहा है । नदियों के अलंकृत वर्णन में नदियों के नामों का सुंदर वर्णन किया गया है और इस संवाद से यह संदेश जाता है कि शत्रु की बहुत बड़ी सेना को भी अपनी बहन या भाई बनाकर अपने अनुकूल बनाया जा सकता है । सिंधु के दो प्रकार के वर्णन हैं |

सिंधु नदी के दो रूपों का वर्णन -

ऋग्वेद के सूक्त संख्या 10/75 में सिंधु नदी के दो रूपों का वर्णन प्राप्त होता है, एक उसके उग्र रूप का और दूसरा उसके कोमल रूप का । आइए उसके उग्र रूप पर प्रकाश डालते हैं –

दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना ।
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत्[२३] । ।

उग्र रूप का वर्णन एक पुरुषवादी कवि ने किया है । देखो, यह सिन्धु नदी बैल के समान रम्भाती हुई बह रही है । इसकी तेज ध्वनि आकाश और पृथ्वी में व्याप्त होते हुए यह अपनी प्रज्वलित तरंगों से अनंत वेग को बनाए रखती है । जब यह प्रचण्ड ध्वनि करती हुई बहती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि मेघों से गड़गड़ाहट के साथ वर्षा हो रही है । यहाँ एक बैल की समानता में सुंदरता और एक साथ एकत्रित होने वाली बारिश के चिंतन में दयालु पाठक हैं वे सहज हो सकते हैं ।
सिंधु की कोमल उपस्थिति का वर्णन करते हुए, कवि उसे एक युवा महिला के रूप में चित्रित करता
है –

स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताथि वस्ते सुभगा मधुवृधम्[२४]||

सिन्धु रूप धारण की हुई यह युवती रथ पर आरूढ़ हुई सुन्दर वस्त्र, मृग-आभूषण, सक्रिय, कुण्डल धारण करने वाली, सदाचारी और सौभाग्यवती तथा मधुर वर्धक रूप वाली है । यहाँ नदी को तीव्र प्रवाह वाले रथ पर सवार कहा गया है, अपने सुंदर प्रवाह के कारण सुंदर वस्त्र पहने हुए, अपने सुनहरे फूलों के कारण हिरण के आभूषण पहने हुए, बहने वाले कलश जैसे विभिन्न रंगों के वनस्पति पदार्थ के कारण गंदे, और इसके सुंदर प्रवाह के कारण विनम्र । सिंधु युवती होने का आरोप भी हैरान करने वाला है हम भी हृदय से यह अनुभव करें कि नदी को एक पुरुष के रूप में उसके उग्र रूप को प्रकट करने के लिए और उसे एक युवती के रूप में चित्रित करने के लिए उसे कोमल रूप दिखाने में कितनी रुचि है । यह चित्रण पुरुषों के लिए शक्ति, उग्रता और आक्रामकता और महिलाओं के लिए मधुरता का व्यवहार सिखाता है ।

वायु रथ के दो रूप –

वायु के भी दो रूप होते हैं, एक वायु के तेज झोंके के रूप में और दूसरा मृदु सुगन्धित वायु के रूप में । बवंडर का वर्णन करते हुए कवि ने कहा कि यह वायु रथ पर सवार होकर वेग से चलती है –

वातस्य नु महिमानं रथस्य रुजन्नेति स्तनयन्नस्य घोषः।
दिविस्पृग् यात्यरुणानि कृण्वन्नुतो एति पृथिव्या रेणुमस्यन् [२५] ।।

वायु रथ की महत्व को देखो, यह कैसे महान वेग से चलता है, यह कैसे गरजता है, यह कैसे आकाश को चूमता है, आकाश के किनारों को लाल कर देता है, और यह कैसे पृथ्वी पर धूल बिखेरता हुआ दौड़ता जाता है । यहाँ प्रकृति की कितनी अद्भुत अभिव्यक्ति व्यक्त की गई है | यहाँ बवंडर का आभूषण रथ पर सवार पवन की कल्पना में भी कवि ने अद्भुत दक्षता हासिल की है | इस वर्णन के द्वारा कवि प्राणायाम, योगाभ्यासी द्वारा समस्त शरीर, मन और मलिनता के नष्ट होने की सूचना भी देता है । साथ ही वज्र के वर्णन से यह संदेश भी मिलता है कि जब मनुष्य विपत्ति में पड़े तो उसे वायु के समान गरजते हुए, सभी बाधाओं को धूल चटाते हुए और शत्रु को लहू से ढँकते हुए आगे बढ़ना चाहिए । अगले ही मन्त्र में कवि वायु का भी सुन्दर और सौम्य वर्णन करता है । जिस दिशा में वायु चलती है वह ***जिस*** दिशा में होती है जिसमें अचल चीजें, जैसे पेड़-पौधे झुकते हैं । नदियों, समुद्रों, झीलों आदि के जलाशय भी इससे मिलते हैं । जल वाचक 'अपः' शब्द स्त्रीलिंग है, जिससे कवि द्वारा यह संकेत मिलता है कि जिस तरह एक युवक को पत्नी मिलती है, उसी तरह वायु पानी के रूप में अपनी पत्नी को गले लगाता है । उसके साथ रथ में बैठकर बातें करते हुए, सारे जगत के राजा पवन देवता हर्षित होकर धीरे-धीरे चलते हैं ।

संप्रेरते अनु वातस्य विष्ठा एवं गच्छन्ति समनं न योषाः ।।
ताभिः सयुक् सरथं देव ईयतेऽस्य विश्वस्य भुवनस्य राजा[२६] ।।

इससे मनुष्य को यह सन्देश जाता है कि उसे अपनी युवावस्था में न केवल निरन्तर उग्र रहना चाहिए, अपितु मंद- मंद मुस्कुराते हुए, हर्षित, सदाचारी तथा मधुर रूप का भी प्रदर्शन करना चाहिए ।

इस प्रकार वेदों में पञ्च महाभूतों की स्तुति, वंदना और अभिनन्दन किया गया है | ऋषियों ने पर्यावरण के सरंक्षण के लिए इन सभी का महत्व बताया है । यदि हम संसार को सुखी, सौभाग्यशाली, आनंद से परिपूर्ण और रोगमुक्त बनाना चाहते हैं तो वेद में प्रतिपादित नियमों का अनुपालन और उनके द्वारा प्रतिपादित उपायों पर निर्भरता नितांत आवश्यक है ।

संदर्भ

1. यजुर्वेद, शांति पाठ मंत्र |
2. ऋग्वेद – १-१६१ -५२
3. ऋग्वेद – १-१६१ -४२
4. ऋग्वेद – १-१११ -९
5. ऋग्वेद – १-१ -१
6. यजुर्वेद – २-२१
7. यजुर्वेद – ३-१
8. ऋग्वेद – १-१८६ -१
9. ऋग्वेद – १-१८६ -३
10. ऋग्वेद – १०-१३७ -३
11. ऋग्वेद सोमलता वर्णन |
12. महाभारत , भीष्म पर्व |
13. ऋग्वेद – १०-१७ -२
14. शुक्लयजुर्वेद
15. निरु. 9/28/24
16. ऋग्वेद – 10/146/2
17. ऋग्वेद – 10/146/6
18. निरुक्तम् (2/24
19. निरुक्तम्
20. निरुक्तम् 9/24/20
21. ऋग्वेद – ३/३३/१
22. निरुक्तम् 9/24/20
23. ऋग्वेद – 10/75/3
24. ऋग्वेद – 10/75/8
25. ऋग्वेद – 10/168/1
26. ऋग्वेद – 10/168/2